मानवीय भावनाओं से पूर्ण हृदय में दूसरों के दुखों के प्रति कोमलता होती है, पर ऐसी कोमलता नहीं कि दूसरे उसे अपने विचारों और हितों के लिए इस्तेमाल कर ले जाएँ। यानी, दूसरों के काम आने का अर्थ है– उनके दुख-दर्द में काम आना, न कि उनकी स्वार्थसिद्धि का साधन बनना। एक और संकेतार्थ हो सकता है कि एक बार सच्ची मानवता को समर्पित हुए हृदय को किसी और रास्ते पर नहीं डाला जा सकता।

गौरैया

राजकुमार के विषय में आप जान चुके हैं कि उसके भीतर मानवीय संवेदनाओं का उद्रेक तब होता है, जब वह अपने परिवेश और उसमें व्याप्त दुखों से परिचित होता है; मगर गौरैया के भीतर दूसरों के प्रति ममता का सोता फूटने का कारण राजकुमार का साथ है, उसका व्यवहार है। यानी दूसरों के प्रति सहानुभूति के भाव तक पहुँचने के दो कारण इस कहानी में हैं, पहला–दुख का साक्षात्कार और दूसरा-मानवीय गुणों से परिपूर्ण व्यक्ति के संपर्क में आना अर्थात् सत्संग।

इस कहानी में जब गौरैया से हमारा साक्षात्कार होता है, तो वह हमें नकचढ़ी और अभिमानी मालूम होती है। उसका पहला ही संवाद है–''मैं समझ रही थी कि यह शहर मेरा स्वागत करेगा।'' वह मूर्ति के पास उतरती है और संतोष प्रकट करती है कि उसका 'शयनागार सोने का है।' राजकुमार के यह कहने पर कि उसका हृदय जस्ते का है, वह निराश होती है–'अच्छा, तो यह राजकुमार ठोस सोने का नहीं है।' राजकुमार जब उससे आग्रह करता है कि वह उसकी तलवार की मूठ में लगा लाल बीमार बच्चे और उसकी श्रमिक माँ को दे आए, तो व उस पचड़े में नहीं पड़ना चाहती, क्योंकि वह तो अपनी कल्पनाओं की दुनिया में खोई है, जहाँ नदी है, कमल के फूल हैं, राजाओं के मकबरे हैं, रत्न हैं। वह इतनी आत्म-सीमित है कि दुबारा आग्रह करने और बच्चे के उदास और प्यासे होने के बारे में बताने पर भी इन्कार ही करती है–''उँह ! मुझे बच्चों से ज़रा भी स्नेह नहीं है......पिछले वसंत में दो बच्चे रोज़ आकर मुझे ढेले मारा करते थे। यद्यपि मुझे चोट नहीं लगी, मैं बहुत तेज़ उड़ती हूँ, किंतु यह बड़ी ही अपमानजनक बात है।'' लेकिन, सोने से मढ़े और रत्नों से जड़े राजकुमार को उदास देखकर उसे 'दया' आ जाती है। आप जानते ही होंगे कि दया या तरस के भाव में हम दूसरे के समान अनुभव नहीं करते, बल्कि हम उससे भिन्न और अक्सर अधिक सक्षम या बड़े होते हैं, तो वह गौरैया राजकुमार पर तरस खाकर उसका काम करने को तैयार होती है। मगर यह क्या ? वह तो सिर्फ़ लाल पहुँचाने गई थी, फिर बीमार बच्चे के ऊपर अपने पंखों से हवा क्यों करने लगी ? दरअसल, वह गई तो थी राजकुमार की उदासी पर तरस खाकर, लेकिन बच्चे को बुखार से तड़पते देख उसे भी दुख का अनुभव हुआ और वह बच्चे के प्रति सहानुभूति महसूस करने लगी। उसके इस काम ने उसके मन-मस्तिष्क को अपने प्रभाव में ले लिया। इसी भावना के उद्रेक के कारण उसे उस दिन ठंड भी नहीं लग रही थी। दूसरों की भलाई, उनके साथ संबंध की गरमी ने उसे ठंड का अनुभव नहीं होने दिया। मगर, गौरैया की अनोखेपन की तलाश, सुखमय जीवन का सपना और प्रकृति के सौंदर्य के प्रति कुतूहल अभी मौजूद था, इसीलिए वह राजकुमार के अगले आग्रह पर पहले तो

अपने कार्यक्रम के बारे में बताती है, लेकिन पिछले दिन के अनुभव के तहत उससे दूसरा लाल दे आने के लिए पूछती है। किंतु, राजकुमार द्वारा की गई अपनी आँख निकालकर दे आने की बात से उसके त्याग के स्तर को महसूस कर उसका हृदय फट पड़ता है और वह रोने लगती है तथा इस काम को करने से इन्कार कर देती है। आपने गौर किया कि गौरैया के पहले इन्कार और इस इन्कार में फ़र्क है ! हाँ, पहली बार वह अपनी दुनिया में मगन होने के कारण इन्कार करती है, पर इस बार के इन्कार में राजकुमार के प्रति प्रेम की भावना है और साथ ही, त्याग की उस भावना से अभिभूत होना भी है, जो मनुष्य के दूसरों के लिए खुद को अर्पित कर देने से पैदा होती है। तीसरी बार फिर गौरैया अपने सपनों की दुनिया में जाने की चर्चा करती है, पर इस बार वह राजकुमार के आग्रह पर सिरे से इन्कार नहीं करती। वह कहती है कि ''कहो तो मैं आज रात-भर और रुक जाऊँ, मगर मैं तुम्हारी आँख नहीं निकालूँगी। फिर तो तुम बिल्कुल ही अंधे हो जाओगे !'' राजकुमार के फिर भी आग्रह करने पर वह उसकी दूसरी आँख उस लड़की को दे तो ज़रूर आती है, पर अपने सपनों के देश जाने के कार्यक्रम को रद्द कर देती है। वही गौरैया, जो अभावग्रस्त लोगों को कुछ दे आने के राजकुमार के आग्रह पर अपनी इच्छाओं-आकांक्षाओं-कल्पनाओं का हवाला देने लगती थी, अब राजकुमार के मिस्र देश चले जाने के आग्रह पर भी इन्कार कर देती है और उसी के साथ रहने का फ़ैसला करती है।

गौरैया राजकुमार को दुनिया की आश्चर्यजनक वस्तुओं और घटनाओं की कहानियाँ सुनाती है। मगर, राजकुमार अब जान चुका है कि रहस्य, रोमांच, आश्चर्य चीज़ों के अनोखेपन में नहीं, बल्कि इन्सान के दुख-दर्द में है। वह गौरैया को प्रेरित करता है और वही गौरैया, जो बच्चों से चिढ़ती थी, अब उनकी वास्तविक ज़िंदगी के मर्म को पहचानती है और राजकुमार की मूर्ति के स्वर्ण-पत्र उन बच्चों में बाँटती है, उनके चेहरे पर झलकने वाली गुलाबी किरणों से संतुष्ट होती है। याद रखें कि अब बच्चों के दुख-दर्द को राजकुमार नहीं देख सकता था, क्योंकि वह अंधा हो चुका था; गौरैया ही अब उनकी तकलीफ़ों से व्यथित हो रही थी। उनके दुख-दर्दों में भागीदारी करती गौरैया, राजकुमार के गुणों से अभिभूत गौरैया, प्रेम की उदात्त भावना से पूर्ण गौरैया स्वयं अपने प्राण न्योछावर कर देती है। गौरैया के इस प्रेम, समर्पण और त्याग की भावना की पुष्टि कहानी के अंत में ईश्वर द्वारा स्वर्ग की डालों पर उसे स्थान देने से होती है, यद्यपि नगर का प्रभु वर्ग-मेयर और उसके साथी- उसे कूड़ेखाने में फेंकने लायक समझता है।

इस तरह, गौरैया के चरित्रांकन में लेखक इस बात को हमारे समक्ष रखता है कि सज्जनों के साथ से व्यक्ति के सोचने-समझने के नज़रिए में अंतर आता है और यथार्थ को देखकर उसके अंत:करण की आँखें खुलती हैं तथा वह भी उन सद्गुणों से युक्त हो जाता है। केवल दुर्गुण ही संक्रामक नहीं होते, बल्कि सद्गुण भी एक से दूसरे और दूसरे से तीसरे तक फैलते हैं; आत्मा को मानवता के उच्च शिखरों तक ले जाते हैं।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न-13.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. सुखी राजकुमार का हृदय भट्‌टी में न गलने का अभिप्राय है :

   (क) भ्रष्ट अधिकारियों के कारण जस्ते में मिलावट होना ☐

   (ख) दान करते हुए राजकुमार की संवेदनाओं का चुक जाना ☐

   (ग) गौरैया का साथ पाने के लिए कूड़ेदान में फेंके जाने का यत्न ☐

   (घ) संवेदनाओं को स्वार्थ-सिद्धि का साधन न बनने देना ☐

2. गौरैया सुखी राजकुमार के सान्निध्य में क्या सीखती है ?

   (क) तरस खाना ☐ (ख) निस्वार्थ प्रेम ☐

   (ग) दया करना ☐ (घ) आत्म-विश्लेषण ☐

3. मिस्र देश का बार-बार ज़िक्र करने से गौरैया के चरित्र की किस बात का पता लगता है ?

   (क) बात को टालने की प्रवृत्ति का ☐

   (ख) साथियों के प्रति अटूट लगाव का ☐

   (ग) पर्यटन के प्रति उन्माद का ☐

   (घ) अनोखेपन और ऐश्वर्य के प्रति लगाव का ☐

3.2.3 संवाद

आपने देखा कि किस तरह कहानी के पात्र उसके कथानक को विस्तार देते हैं और कथावस्तु को हमारे सामने उद्‌घाटित करते हैं। पात्रों को प्रस्तुत करने के प्रायः दो तरीके होते हैं– या तो लेखक स्वयं पात्रों के विषय में जानकारी देता है या फिर उनके संवादों के माध्यम से उनकी चारित्रिक विशेषताओं का उद्‌घाटन करता है। कहानी-कला के विकास के साथ-साथ लेखक द्वारा अपने पात्रों और कथावस्तु के बारे में स्वयं ब्यौरे देना बहुत अच्छा नहीं समझा जाता। इसीलिए, कहानीकार संवादों और स्थितियों के द्वारा अपने पात्रों और कथावस्तु को हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है।

'सुखी राजकुमार' कहानी में भी कहानीकार वर्णन कम-से-कम करता है और संवादों तथा स्थितियों के माध्यम से कहानी कहता है। यानी, इस कहानी में नेरेशन (वर्णन) बहुत कम है। पूरी कहानी संवादों के ज़रिए आगे बढ़ती है। इस कारण कहानी के कथानक में बहुत चुस्ती आ गई है। एक भी शब्द हमें फ़ालतू नहीं लगता। राजकुमार के आरंभिक संवाद से हमें उसके अतीत और वर्तमान की जीवन-स्थितियों, मनोदशा और वैचारिक परिवर्तन का पता कुछ ही वाक्यों में मिल जाता है। साथ ही, उसके विषय में यह भी पता लग जाता है कि वह सुखी समझा जाता है, पर सुखी है नहीं। इसके अलावा इसी संवाद से कहानी अपने मुख्य विषय पर आ जाती है।

जिस तरह राजकुमार के चरित्र में परिवर्तन होता है, वैसे ही गौरैया के चरित्र का भी विकास होता है। आरंभ की नकचढ़ी और आत्म-सीमित गौरैया कहानी के अंत में उदात्त चरित्र वाली दिखाई पड़ती है। कहानीकार गौरैया के चरित्र के इस परिवर्तन के विषय में अपनी ओर से कोई टिप्पणी नहीं करता, उसके संवादों के माध्यम से पाठक ख़ुद इस निष्कर्ष तक पहुँचता है। आइए, ज़रा इन संवादों पर ध्यान दें:

- मैं समझ रही थी कि शहर मेरा स्वागत करेगा।
- इस प्रतिमा से क्या फ़ायदा, अगर यह वर्षा भी नहीं रोक सकती!
- उँह! मुझे बच्चों से ज़रा भी स्नेह नहीं है।
- अच्छा, आज मैं और रुक जाऊँगी, क्या दूसरा लाल उसे दे आऊँ?
- प्यारे राजकुमार, ... यह तो मुझसे न होगा....
- अब तुम अंधे हो.... इसलिए मैं हमेशा तुम्हारे पास रहूँगी।

गौरैया की तरह ही राजकुमार के हृदय की विशालता और उसकी सोच-समझ के विषय में भी उसके संवादों से ही पता लगता है। कहानी के अंत में मेयर एवं उसके साथी सभासदों के संवादों से उनकी क्षुद्र मानसिकता और स्वार्थपरता का तथा राजकुमार एवं गौरैया के त्याग, बलिदान और उच्चादर्श की वास्तविक कीमत का अंदाज़ा ईश्वर के संवाद से होता है।

कहानी में आम लोगों के दुखों के प्रति अभिजात वर्ग के उपेक्षापूर्ण रवैये को भी संवादों से ही उभारा गया है। सुखी राजकुमार के आरंभिक कथन में उसके जीवन-काल का उल्लेख; राजकुमारी की अंगरक्षिका का कहना ''मगर ये लोग कितनी देर लगाते हैं'; बारिश में चौकीदार का पुलिया के नीचे सिकुड़े बैठे बच्चों से कहना– ''भागो यहाँ से'' और मेयर का बड़ी हिकारत से मूर्ति के विषय में कथन- ''यह तो बिलकुल पत्थर का भिखारी मालूम देता है'; सदस्यों की सहमति- ''बिल्कुल-बिल्कुल पत्थर का भिखारी!''– ये सभी इस संदर्भ में द्रष्टव्य हैं।

राजकुमार के परदुखकातर (दूसरों के दुख से दुखी होने का गुण) हृदय की कोमलता उसके संवादों में मौजूद है। उसके संवादों में आदेश का स्वर नहीं, बल्कि अनुरोध की

विनम्रता और आग्रह की आत्मीयता है। वह गौरैया से किस तरह पेश आता है और किस तरह लोगों के जीवन में सुख का संचार करने वाले काम कराता है– इस पर गौर कीजिए:

- गौरैया! गौरैया! सिर्फ़ आज रात को तुम मेरा काम कर दो। बच्चा प्यासा है– उदास भी है!
- गौरैया! गौरैया! नन्हीं गौरैया! क्या तुम आज रात को और नहीं ठहर सकतीं...
- लेकिन, केवल आज रात के लिए भी तुम न रुकोगी?
- गौरैया! प्यारी गौरैया!.... तुम्हें मेरी बात माननी चाहिए।
- नहीं–नहीं गौरैया! अब तुम मिस्र देश को जाओ।

इस प्रकार 'सुखी राजकुमार' कहानी के संवाद छोटे–छोटे, चुस्त–दुरुस्त, सहज, सरल, रोचक और भावानुकूल हैं। वे कथानक को आगे बढ़ाने का काम करते हैं, पात्रों के चरित्र की विशेषताओं को उजागर करते हैं और कथावस्तु के मुख्य बिंदुओं का उद्घाटन करते हैं। इसके साथ–साथ वातावरण की सृष्टि भी करते हैं और उस पर टिप्पणी भी।

क्रियाकलाप–13.2

इस कहानी को पढ़ते हुए आपने राजकुमार के संवादों पर ध्यान दिया? राजकुमार के प्रायः सभी संवाद गौरैया से हैं। वह गौरैया से परोपकार के काम कराना चाहता है। इसके लिए वह उसे आदेश तो दे नहीं सकता, लेकिन वह उसके आगे गिड़गिड़ाता भी नहीं है। एक ही तरीका है कि वह उससे आग्रह करे, और यह आग्रह भी आत्मीयतापूर्ण हो, ताकि ठुकराया न जा सके। आप देखते हैं कि राजकुमार गौरैया से आत्मीय संबोधन करता है– 'प्यारी गौरैया', 'नन्हीं गौरैया', 'गौरैया–गौरैया' आदि। इसी के साथ उसके वाक्य–विन्यास में आग्रह का स्वर है–

1. "सिर्फ़ आज रात तुम मेरा काम कर दो। बच्चा प्यासा है– उदास भी।"
2. "क्या तुम आज रात को और नहीं ठहर सकतीं?"
3. "लेकिन, केवल आज रात के लिए भी तुम न रुकोगी?"

उपर्युक्त तीनों वाक्यों पर ध्यान दीजिए। पहली बार 'सिर्फ आज... कर दो' कहकर अनुनय किया गया है, दूसरी बार चूँकि साधारण अनुनय किया जा चुका है, इसलिए 'और नहीं ठहर सकतीं?" की याचना है। पहले वाक्य में अपनी बात कही गई है, दूसरे में निर्णय दूसरे पर छोड़ते हुए अपने पक्ष में निर्णय लेने का आग्रह है। तीसरी बार में खुद को बिल्कुल महत्त्व न देते हुए गौरैया के निर्णय को सर्वोच्च रखा गया है और उसकी संवेदनशीलता जगाते हुए आग्रह किया गया है।

आइए, अब विभिन्न स्थितियों में प्रयोग किए जाने वाले वाक्यों के निर्माण का अभ्यास करें:

(क) अगर आपको भूकंप अथवा बाढ़ जैसी आपदाओं में लोगों की मदद के लिए सहयोग माँगना हो, तो आप किस-किस तरह से अपनी बात कह सकते हैं?

(i) ....

(ii) ....

(iii) ....

(ख) आपकी साइकिल या स्कूटर दूसरे से टकरा गया है और वह तैश में है। आप किस तरह उसे शांत करेंगे?

(i) ....

(ii) ....

(iii) ....

13.2.4 वातावरण

जैसा कि हम जान चुके हैं, 'सुखी राजकुमार' कहानी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें कहानीकार स्वयं कुछ नहीं कहता, अपितु अपने पात्रों, उनके क्रियाकलापों, उनके व्यवहार के तरीकों से अपनी बात हम तक पहुँचाता है। मुख्य कथावस्तु और चरित्रों के विषय में तो बहुत से कहानीकार ऐसा करते हैं, पर वे भी देश, काल और वातावरण का वर्णन प्रायः अपनी ज़बान से करने लगते हैं। किंतु, इस कहानी में कहानीकार की ख़ूबी यह है कि वह वातावरण को भी अपने पात्रों और उनके जीवनानुभवों के द्‌वारा ही अभिव्यक्त करता है। देश और काल यानी स्थान और कहानी के घटना-समय का उल्लेख न करके वह कहानी को सार्वदेशिक और सार्वकालिक बना देता है। कहानी कहाँ की है? इसका उत्तर कहानी में मिलेगा- एक नगर की। किस नगर की? कोई उल्लेख नहीं। कहानी कब की है?- कोई उल्लेख नहीं। अब कहानी को पूरा पढ़ जाइए- लगेगा कि यह तो हमारे अपने यहाँ की-सी है, हमारे अपने ही समय की है! यानी कहानी में जो स्थितियाँ हैं, जो चरित्र हैं, जो मानव-स्वभाव और व्यवहार-प्रणाली है, जो मुद्‌दे हैं, जो प्रश्न हैं- वे हमारे अपने परिवेश के हैं, यद्‌यपि यह कहानी इंग्लैन्ड में लगभग सवा सौ साल पहले लिखी गई थी। इसका एक और कारण यह भी है कि कहानी का विषय मानव-सभ्यता के विकास-क्रम का वह दुर्भाग्यपूर्ण सोपान है, जिसमें मनुष्य आर्थिक आधार पर वर्गों में बँट चुका है। कुछ लोगों के ऐय्याशीपूर्ण जीवन जीने की ललक ने बड़े मानव-समूह को कंगाली, बदहाली और भुखमरी तक पहुँचा दिया है। इसी वर्ग ने सुंदरता और सुख की धन-वैभव आधारित परिभाषाएँ गढ़ ली हैं। कहानीकार पूरी कहानी में स्थितियों के वैषम्य (कन्ट्रास्ट) के ज़रिए इस प्रश्न को हमारे सामने उभारता चलता है और

हमारी संवेदनाओं को झकझोर कर हमारे भीतर वैचारिक प्रेरणा पैदा कर देता है। कुछ उदारहण लीजिए:

1. राजकुमार की जीवन-काल की जीवन-दृष्टि और मूर्ति-रूप में स्थापित होने के बाद की जीवन-दृष्टि।

2. गौरैया का आरंभिक व्यवहार, विशेषत: तब का, जब राजकुमार दुखी और परेशान लोगों के विषय में बताता है और गौरैया मिस्र देश की सुखद तथा वैचित्र्यपूर्ण कल्पनाओं का बयान करती है।

3. गौरैया राजकुमार के भलाई के कामों के लिए जब नगर पर उड़ान भरती है, तो गिरजे और देवदूतों की मूर्तियों का ज़िक्र है। यानी, नगर का धनी वर्ग धर्म के कर्मकांडों और शास्त्र पर तो आस्था रखता है, पर उसके व्यावहारिक पक्ष, जैसे- सत्य, परोपकार, समानता आदि पर नहीं सोचता।

4. महल के छज्जे पर किशोरी प्रेम की अद्‌भुत शक्ति ज़िक्र करती है, पर उसके लिए प्रेम का अर्थ सिर्फ स्त्री-पुरुष संबंध या बाहरी सौंदर्य तक सीमित है, तभी तो वह फूल काढ़ने वाली स्त्री से ख़फ़ा है। अभिजात-वर्ग पर यहाँ स्वत: ही टिप्पणी हो जाती है।

5. राजकुमार द्वारा नगर का हाल जानने के लिए गौरैया को भेजने पर गौरैया का यथार्थ-अवलोकन : ''अमीर अपने महलों में रंगरलियाँ मना रहे थे और गरीब हाथ फैलाए भीख माँग रहे थे। वह अँधेरी गलियों पर से उड़ी और उसने देखा कि भूखे बच्चे ज़र्द चेहरे लटकाए हुए सूनी निगाहों से देख रहे हैं। एक पुलिया के नीचे दो बच्चे सिकुड़े हुए बैठे हैं। ''भागो यहाँ से!'' चौकीदार बोला और वे बारिश में भीगते हुए चल दिए।''

कहानी में गौण पात्रों का सृजन परिवेश को चित्रित करने के लिए ही किया गया है। आइए, ज़रा इन पात्रों पर भी ध्यान दीजिए:

1. **राजकुमारी की अंगरक्षिका,** जो मेहनतकश लोगों के विषय में अभिजात-वर्ग के रवैये को अभिव्यक्त करती है- ''मगर ये लोग कितनी देर लगाते हैं।''

2. **बीमार बच्चा,** जो गौरैया द्वारा अपने पंखों से हवा करने पर स्वस्थ महसूस करता है। यह पात्र सिर्फ़ गौरैया के भीतर आ रहे परिवर्तन को स्पष्ट करने के लिए है।

3. **तरुण कलाकार,** जो रंगमंच के लिए नाटक लिख रहा है। वह निर्धन है, पर उसकी आँखों में भविष्य के सपने हैं और है- महत्त्वाकांक्षा। कलाकार की महत्त्वाकांक्षा और उसकी आत्ममुग्धता की अभिव्यक्ति उसके कथन द्वारा होती है- ''ओह, मालूम होता है, मेरा मोल लोग आँक रहे हैं। यह शायद किसी बड़े भारी प्रशंसक ने भेजा है। अब मैं अपना नाटक समाप्त कर सकूँगा।''

4. **रोती हुई लड़की,** जिसका सौदा नाली में गिर गया है और जिसे अपने पिता से पिटने का डर है। यह सरल हृदय निर्धन बालिका नीलम को सिर्फ़ रंगीन काँच का टुकड़ा समझती है। उसका यह समझना गरीब लोगों की सरलता और गरीबी की भीषणता को (वे इतने गरीब हैं कि चीज़ों की कीमत को भी नहीं जानते) उजागर करता है।

   उपर्युक्त चारों पात्रों की योजना का एक और उद्देश्य मालूम होता है, वह यह कि चारों ही पात्र यह नहीं जानते कि कौन उनके लिए उत्सर्ग (बलिदान) कर रहा है।

5. **वे बच्चे,** जिनके चेहरे पीले पड़ गए हैं, जो वर्षा से बचने के लिए पुलिया के नीचे बैठे हैं, पर चौकीदार उन्हें वहाँ से भी भगा देता है। इन पात्रों की योजना व्यापक जनता के दुख-दर्दों की भयावहता को स्पष्ट करने और अभिजात वर्ग के लिए काम करने वाले मामूली आदमियों के भी असंवेदनशील बन जाने को उजागर करती है। इसके अतिरिक्त इनके ज़रिए राजकुमार की उदारता की चरम सीमा (स्वर्ण-पत्रों के रूप में अपनी खाल को भी उधड़वा देना) और गौरैया के अंदर समानुभुति का विकास (क्योंकि इनके विषय में राजकुमार ने नहीं, बल्कि खुद गौरैया ने महसूस किया है) भी सूचित होता है।

6. **मेयर,** जिसके ऊपर नगर की व्यवस्था की ज़िम्मेदारी है, जिसे नगर की जनता के दुख-दर्द और उनकी गरीबी नहीं दिखती, पर मूर्ति का भद्दापन दीख जाता है, क्योंकि दरअसल वह स्वार्थ में अंधा और आत्मकेंद्रित है। उसकी नज़र राजकुमार की जगह अपनी मूर्ति लगवाने पर है। उसके सभासद भी चाटुकार और स्वार्थी हैं। वे सभी बातों पर मेयर की हाँ-में-हाँ मिलाते हैं, जनता के मुद्दों पर बहस नहीं करते; पर अपनी मूर्ति लगवाने के लिए मेयर के विरुद्ध भी जाते हैं और आपस में झगड़ते भी हैं। ये पात्र आज की असंवेदनशील, आत्मकेंद्रित और स्वार्थ-तत्पर शासन-व्यवस्था की ओर संकेत करते हैं।

7. **कलाविज्ञ,** जो रूप-सौंदर्य को ही महत्त्वपूर्ण समझता है और उसी को उपयोगी भी। यह पात्र कलाकारों के उस वर्ग की ओर संकेत करता है, जो कला के वास्तविक मर्म को नहीं समझते।

8. **ईश्वर और उसका देवदूत,** जो कहानी के वास्तविक उद्देश्य को हमारे समक्ष रखते हैं। यह उद्देश्य है– मनुष्य के दुख-दर्दों के प्रति समानुभूति की भावना और उसके लिए कर्मशील होने की ज़रूरत। लेखक कहना चाहता है कि वास्तविक सौंदर्य मनुष्यता की भावना और कर्मशीलता में निहित है।

पाठगत प्रश्न-13.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

टिप्पणी

1. निम्नलिखित में से मुहावरा कौन-सा है?

   (क) बूँद टप-से गिरना ☐ (ख) विहार करना ☐

   (ग) हाँ-में-हाँ मिलाना ☐ (घ) मार से बच जाना ☐

2. 'मैं इसी जगह पर ठहरूँगी' अर्थ को ठीक तरह से व्यक्त करने वाला उपयुक्त वाक्य है-

   (क) मैं यहाँ ठहरूँगी ☐ (ख) मैं यहाँ ही ठहरूँगी ☐

   (ग) मैं यहीं ही ठहरूँगी ☐ (घ) मैं यहीं ठहरूँगी ☐

3. मानवीय गुणों को मानवेतर प्राणियों द्वारा व्यक्त करने में है-

   (क) चमत्कार ☐ (ख) विषमता ☐

   (ग) विसंगति ☐ (घ) विडंबना ☐

13.2.5 भाषा-शैली

जैसा कि आप जान चुके हैं यह कहानी आयरिश लेखक ऑस्कर वाइल्ड द्वारा मूल रूप से अंग्रेज़ी भाषा में लिखी गई है। आप यह भी जान चुके हैं कि कहानी में घटना-स्थान और घटना-समय का उल्लेख न होने से यह कहानी किसी भी जगह और किसी भी वक्त की कहानी बन गई है। इसीलिए इस कहानी का अनुवाद करते हुए हिंदी के ख्यातिप्राप्त कवि-कथाकार-नाटककार-आलोचक-संपादक धर्मवीर भारती ने ऐसी भाषा-शैली का उपयोग किया है कि हमें यह कहानी अपने ही देश की और अपने ही समय की लगती है। उन्होंने अंग्रेज़ी के शब्द-प्रयोग, मुहावरों और विशिष्ट अभिव्यक्तियों को हिंदी भाषा और संस्कृति के अनुकूल ढाल दिया है। आइए कुछ पर ध्यान दें:

(क) शब्द-प्रयोग: स्वर्ण पत्र, स्तंभासीन, टप-से, डबडबाना, ढुलकना, फड़फड़ाना, क्षत-विक्षत, नृत्य-वसन, अंग-लेपन, ढेले, तड़पना, फुदककर, ठंडक, सपनीली, कुंज, पुरोहित, रंगरलियाँ, छज्जा, गज़ब का, कलाविज्ञ, कूड़ेखाना, चहकना, विहार करना आदि।

(ख) मुहावरे: हृदय फटा जाना, मोल आँकना, रंगरलियाँ मनाना, चेहरे लटकना, सूनी निगाहों से देखना, दिन करीब होना, हाँ-में-हाँ मिलाना आदि।

(ग) विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ: पंखों में मुँह छिपाकर सोना, बूँद टप-से गिरना, आँखें डबडबाना, गाल पर आँसू ढुलकना, झपकी आना, दिन उगना, चाँद उगना, सपने टूटना, भोर का तारा डूबना, फूट-फूट कर रोना, खाली हाथ घर जाना, चेहरे पर गुलाबी किरणें झलक आना, ठंड से अकड़ना आदि।

(घ) वाक्य-विन्यासः मैं ठहरूँ कहाँ?/मैं यहीं ठहरूँगी/तुमने तो मुझे बिलकुल भिगो दिया/मुझे बच्चों से ज़रा भी स्नेह नहीं हैं/ लेकिन कोई बात नहीं, मैं आज तुम्हारा काम कर दूँगी/तो वह मार से बच जाएगी आदि।

इन वाक्यों में रेखांकित हिस्सों पर विशेष ध्यान दीजिए। आप इस पाठ में 'संवाद' और 'क्रियाकलाप' के अंतर्गत भी वाक्य-विन्यास पर ध्यान दे चुके हैं।

इस कहानी को पढ़ते समय कई जगह आपको लगा होगा कि कहानी की स्थितियाँ आपके सामने मानो सचमुच उपस्थित हो रही हैं। अर्थात्, इस कहानी में चित्रात्मकता की विशेषता मिलती है। लेखक ने यह चित्रात्मकता दो तरह से उपस्थित की है। 1. जहाँ वह स्थितियों अथवा व्यक्ति-विशेष की दशा को बताने के लिए ब्यौरे देता है। याद कीजिए कहानी की आरंभिक पंक्तियाँ या उस स्त्री का वर्णन, जिसकी उँगलियाँ सुई के घाव से क्षत-विक्षत हैं। टूटे-फूटे मकान में बुखार से तड़पता बच्चे का शब्द-चित्र तथा तरुण कलाकार का वर्णन भी इसके उदाहरण हैं। ब्यौरों के माध्यम से बनाए गए अन्य शब्द-चित्रों को आप भी ढूँढ सकते हैं। 2. ख़ास तरह के शब्दों के चुनाव से भी इस कहानी में चित्रात्मकता लाई गई है। टप-से, डबडबाना, ढुलकना, फड़फड़ाना आदि शब्द ध्वनियों के माध्यम से चित्र उपस्थित करते हैं। ये ऐसे शब्द हैं, जिनका हम भाषा को प्रभावशाली बनाने के लिए अक्सर उपयोग करते हैं। अर्थात्, लेखक ने जानी-बूझी स्थितियों को पाठक के सामने प्रकट करने के लिए जानी-बूझी शब्दावली का उपयोग किया है।

आपने यह भी महसूस किया होगा कि इस कहानी में भाषा की मितव्ययिता मिलती है अर्थात् एक भी शब्द अनावश्यक नहीं है। शायद इसीलिए कहानी में लेखक अपनी ओर से बहुत कम टिप्पणी करता है। यह कहानी संवादों से या बातचीत की शैली से ही आगे बढ़ती है। इसके विषय में आप पहले ही विस्तार से पढ़ चुके हैं। कम शब्दों में अधिक व्यक्त करने के कारण इस कहानी में सांकेतिकता का गुण भी आ गया है। इसी से कहानी की भाषा चुस्त-दुरुस्त हो गयी है।

आपने पाठ में जो वाक्य पढ़े हैं, उनमें कुछ वाक्यों में एक ही क्रिया है और कुछ वाक्यों में एकाधिक क्रियाएँ हैं। इस आधार पर वाक्यों के दो भेद होते हैं- सरल वाक्य और जटिल वाक्य। सरल वाक्य में एक उद्देश्य और एक ही विधेय होता है तथा ऐसे वाक्य से समापिका क्रिया होती है, जैसे- (i) मोहन जाता है, (ii) राम का बेटा मोहन जाता है, (iii) राम का बेटा मोहन स्कूल जाता है।

उक्त तीनों वाक्यों में समापिका क्रिया एक ही है, अतः ऐसे वाक्य सरल वाक्य कहलाते हैं। कुछ और उदाहरण देखिए: (i) 'नगर में ...... स्थापित थी।' (ii) 'लोग उस प्रतिमा की बड़ी प्रशंसा करते थे।' (iii) दिन भर उड़ने के बाद एक गौरेया रात को नगर के समीप पहुँची।

जटिल वाक्य दो तरह के होते हैं। एक संयुक्त वाक्य और दूसरे मिश्र वाक्य। संयुक्त वाक्य दो समानांतर वाक्यों से बना होता है तथा वह समुच्चयबोधक अव्ययों- और, तथा, एवं,

किंतु, परंतु आदि से जुड़ा होता है, जैसे- (i) पिता जी घर आए और चाचा जी चले गए। (ii) मैं बाजार गया और जलेबी लाया। (iii) या तो तुम इस काम को कर दो, वर्ना मुझे स्वयं करना पड़ेगा।

पाठ से कुछ उदाहरण और देखिए–

(i) वह पीले वस्त्र में लिपटा होगा और मसालों से उसका अंग-लेपन किया गया होगा।

(ii) उसकी गर्दन में पुखराज का हार होगा और उसके हाथ सूखी पत्तियों की तरह होंगे।

मिश्र वाक्य भी दो या दो से अधिक वाक्यों से बना होता है, लेकिन उसमें एक उप वाक्य प्रधान होता है तथा दूसरा आश्रित उप वाक्य होता है, जैसे–

(i) माँ ने कहा कि सोहन नहीं आएगा।

(ii) जो लड़का मुझे मिला था, वही प्रथम आया है।

(iii) जहाँ भी तुम जाओगे, मैं वहीं आ जाऊँगा।

13.2.6 उद्देश्य

इस कहानी को पढ़ने के बाद आप समझ चुके होंगे कि कहानी के माध्यम से लेखक हमसे क्या कहना चाहता है। जी हाँ, ठीक ही समझा आपने। इस कहानी में स्थान और समय का उल्लेख न करके कहानीकार ने उस हर जगह और हर वक्त की बात की है, जहाँ नगर धनी और निर्धन वर्ग में बँटे हैं और जहाँ राजनीतिज्ञ स्वार्थी, कलाविज्ञ रूप-सौंदर्य देखने वाले, आम लोग कीमत से चीज़ों का मूल्यांकन करने वाले, अभिजात और धनी लोग आत्मकेंद्रित और कर्मचारी लोग अपने मालिकों के अनुसार व्यवहार करने वाले हैं। ऐसे किसी भी स्थान पर व्यापक जनता गरीबी, बीमारी, भुखमरी और बदहाली की शिकार होती है और उनमें भी सबसे बदतर स्थिति बच्चों की होती है- उन बच्चों की, जो वहाँ का भविष्य हैं। यानी कथाकार बार-बार बच्चों का ज़िक्र करके ऐसी व्यवस्था के भविष्य की भयावहता को भी व्यक्त करता है।

कहानीकार इस विडंबना को मनुष्य के बाह्य एवं आंतरिक सौंदर्य से जोड़ता है। आमतौर पर देखने में सुंदर यानी रूपवान की और कीमती चीज़ों की प्रशंसा की जाती है, जबकि कहानीकार आंतरिक यानी मानवीय गुणों और कर्म के सौंदर्य को सराहने के लिए हमें प्रेरित करता है। कहानी के प्रारंभ में राजकुमार की प्रतिमा की सभी सराहना करते हैं, पर अंत में मेयर, सभासद और कलाविज्ञ उसे मटमैला और मनहूस समझकर वहाँ से हटाना चाहते हैं। लेकिन, गौरैया राजकुमार के कुरूप होने की प्रक्रिया में उसके कर्म-सौंदर्य को देखते हुए उससे और ज़्यादा प्रेम करने लगती है, यहाँ तक कि ठंड में प्राण त्याग देती है। ईश्वर द्वारा ऐसे राजकुमार और ऐसी गौरैया को स्वर्ग में स्थान दिलाकर कहानीकार एक विडंबना को उजागर करता है। वह विडंबना है– मानव-समाज में मानवीय गुणों की उपेक्षा का भाव। इसी विडंबना को इससे भी समझा जा सकता है कि पत्थर की मूर्ति,

जिसका दिल जस्ते का है, उसमें मानवीय संवेदनाओं का ज्वार है और इसको समझने वाला भी प्राय: उपेक्षित एक मानवेतर प्राणी यानी गौरैया है। इस विडंबना को अनेक प्रकार से उभारकर कहानीकार मनुष्य-समाज में व्याप्त संवेदनहीनता की स्थिति को तोड़ना चाहता है।

आपने क्या सीखा

- जब हम अपने से बाहर देखते हैं, तो हमारे अनुभव हमें संवदेनशील बनाते हैं और समाज के हित में सक्रिय करते हैं।
- गौरैया के व्यक्तित्व-परिवर्तन से हमें पता लगता है कि अच्छे लोगों की संगत से व्यक्तित्व उदार और अधिक सामाजिक बनता है।
- समाज में धनी और निर्धन वर्ग की जीवन-स्थितियों में बड़ी विषमता है। धनी वर्ग प्राय: आत्मकेंद्रित हो जाता है।
- कुछ लोगों तक धन, वैभव, और अधिकार सीमित होने के कारण व्यापक मनुष्य-समाज की मूलभूत आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं हो पातीं। इनके प्रति समानुभूति ही सच्ची मनुष्यता है।
- बाह्य सौंदर्य (रूप-सौंदर्य) से आंतरिक सौंदर्य (कर्म-सौंदर्य) अधिक महत्त्वपूर्ण है- वही हमें श्रेष्ठ मनुष्य बनाता है।
- कहानी में कथावस्तु और पात्रों का चरित्र-चित्रण वर्णन के द्वारा नहीं, बल्कि संवादों के ज़रिए किया गया है।
- कहानी की भाषा में चित्रात्मकता, सांकेतिकता और मितव्ययिता के गुण हैं।

योग्यता-विस्तार

नाटककार, कवि और लेखक ऑस्कर वाइल्ड (1854-1900) का जन्म डबलिन आयरलैंड में हुआ था। उनकी आरंभिक शिक्षा डबलिन में हुई। उनकी माँ एक राजनीतिक लेखिका और पिता एक सफल नेत्र-चिकित्सक थे। जब ऑस्कर वाइल्ड किशोर ही थे, उनका परिवार लंदन चला गया, अत: उनकी आगे की शिक्षा ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय में हुई। विश्वविद्यालय में उन्होंने कवि और लेखक के रूप में अपनी अलग पहचान बना ली। इस दौरान उनकी एक कविता पर उन्हें पुरस्कृत भी किया गया।

उनके लेखन की मुख्य विशेषता वाक्-चातुर्य और हास्य-व्यंग्य है। उन्होंने बच्चों के लिए कविताएँ, नाटक और कहानियाँ लिखीं, किंतु उनके नाटक अधिक लोकप्रिय हुए। उनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं :

कविताएँ (1881)- कविताएँ

सुखी राजकुमार और अन्य कहानियाँ (1888)- कहानियाँ

द पिक्चर ऑफ़ डोरियन ग्रे (1890)- उपन्यास

ए वूमेन ऑफ़ नो इम्पोर्टेन्स (1893)- नाटक

द इम्पोर्टेन्स ऑफ़ बीइंग अर्नेस्ट (1895)- नाटक

1893 में जब वे बच्चों के लिए परी-कथाएँ लिख रहे थे और 'वीमेन वर्ल्ड' नामक पत्रिका के संपादन में संलग्न थे, तब उन्होंने 'सुखी राजकुमार और अन्य कहानियाँ' लिखीं।

पाठांत प्रश्न

1. राजकुमार के जीवन-काल और प्रतिमा बनने के बाद के राजकुमार के व्यक्तित्व की तुलना कीजिए और बताइए कि आपको कौन-सा रूप पसंद है और क्यों?
2. गौरैया के व्यक्तित्व में आने वाले परिवर्तन पर अपनी टिप्पणी लिखिए।
3. 'सुखी राजकुमार' कहानी में चित्रित नगर से अपने परिवेश की तुलना कीजिए।
4. 'सुखी राजकुमार' कहानी में बच्चों की स्थिति का मूल्यांकन कीजिए और स्थिति को बेहतर बनाने के लिए अपने सुझाव लिखिए।
5. 'सुखी राजकुमार' कहानी का सबसे मार्मिक स्थल कौन-सा है और क्यों?
6. 'सुखी राजकुमार' कहानी के संवादों की विशेषताएँ लिखिए।
7. कहानी में विरोधी स्थितियों के वर्णन के पीछे कहानीकार का क्या उद्देश्य है? स्पष्ट कीजिए।
8. ईश्वर द्वारा राजकुमार और गौरैया को स्वर्ग में स्थान देने की बात से कहानीकार क्या संदेश देना चाहता है?
9. राजकुमार की आँख का नीलम पाकर तरुण कलाकार कहता है- ''ओह, मालूम होता है, लोग मेरा मोल आँक रहे हैं। यह शायद किसी बड़े भारी प्रशंसक ने भेजा

है।'' यदि आप इस कलाकार से कुछ कह पाते, तो क्या कहते और क्यों? विस्तार से लिखिए।

10. सरल संयुक्त और मिश्र वाक्यों का एक-एक उदाहरण लिखिए।

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्न

13.1 1. (ख) 2. (क)

13.2 1. (घ), 2. (ख), 3. (घ)

13.3 1. (ग), 2. (घ), 3. (घ)